आपने लिखा

संदर्भ अंक 73 के सभी लेख काफी सराहनीय हैं, भाषा भी सभी के लिए सरल व सुविधाजनक है। कई लेख ऐसे हैं, जिन्हें पढ़ने पर हम व्यक्तिगत तौर पर सोचते हुए लेख से खुद को जोड़ने लगते हैं।

'देर-सबेर बच्चे पढ़ना सीख ही जाते हैं' लेख में बच्चो के पढ़ना शुरू करने की पहल को बताया गया है। हालाँकि, ये समझना थोड़ा मुश्किल लगा कि लेखक किस बात पर ज़्यादा ज़ोर दे रहे हैं। बच्चे को उसकी इच्छानुसार पढ़ने देना चाहिए या अभिभावक को पहल करनी चाहिए?

'सही गलत' कहानी में शिक्षक की सही छवि को दिखाया गया है। इससे बच्चों में शिक्षक के प्रति नकारात्मक सोच पैदा नहीं की गई है बल्कि उस सच को वैसे ही अपनाते हुए लेकिन खुद को आगे बढ़ने के लिए तैयार करना यह बहुत अच्छे ढंग से बताया गया है।

'मिड-डे मील' लेख थोड़ा कमज़ोर लगा लेकिन सरकार की इस योजना का अमल किस तरह हो रहा है, इसका सही रूप रखा गया।

'शिक्षा को दिलचस्प बनाने का एक जतन' द्वारा यह बताया गया कि पाठ्य पुस्तक की सामग्री को सृजनात्मक तरीके से प्रेषित किए जाने पर बच्चों में अधिक रुचि पैदा की जा सकती है, ताकि वे पाठ्य पुस्तकों के अधिक करीब आएँ।

'खेल-खेल में भाषा शिक्षण', एक सही तरीके से रूबरू करवाता है जिससे बच्चों को भाषा, सरल तरीके से सिखाई जा सकती है और उन्हें भी भाषा या सीखने का तरीका किसी तरह का बोझ नहीं लगेगा।

संदर्भ के अंक 74 में 'कॉकरोच की बुद्धि फेल करनी वाली ततैया' में शरीर का आकार छोटा होना कमज़ोर होना है, इस मान्यता से अलग कुदरत का एक अनोखा नज़ारा दिखाया गया है।

'मच्छी मारना' में ये देखने को मिला कि किस तरह बच्चे अपने आसपास के माहौल से सीखते हैं और जो सफल जीवन के लिए उपयोगी होता है।

'तीन चौथाई, आधी कीमत, बज्जी-बज्जी', बच्चे की गरीबी, पढ़ने की चाहत व उस चाहत को पूरा करने के लिए अपनाई सूझ-बूझ को बेहतरीन तरीके से दिखाता है इस कहानी में।

'आश्रम-विद्यालय का प्रारम्भ' पढ़ते हुए लगा कि लेख एक लय में न होकर इधर-उधर चला जाता है। पढ़ते हुए आप कहीं पहुँच जाते हैं और तब तक लेखक कहीं और पहुँच जाते हैं।

तरन्नुम, नई दिल्ली

भूल सुधार

संदर्भ मूल अंक 77 में कवर दो पर आवरण से सम्बन्धित विवरण में भूल से तीसरा आवरण लिखा था। कृपया उसे सुधार कर अन्तिम आवरण पढ़िए। इस भूल के लिए हमें खेद है।

- सम्पादन मण्डल